सुध अरोड़ा

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सुधा अरोड़ा का परिचय और साहित्यिक योगदान

प्रश्न 1 (आसान). सुधा अरोड़ा का जन्म कहाँ हुआ था?

उत्तर – लाहौर (पाकिस्तान)

प्रश्न 2 (आसान). उन्होंने किस विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी?

उत्तर – कलकत्ता विश्वविद्यालय

प्रश्न 3 (मध्यम). सुधा अरोड़ा के किन्हीं दो कहानी संग्रहों के नाम लिखिए।

उत्तर – बगैर तराशे हुए, युद्ध-विराम

प्रश्न 4 (कठिन). सुधा अरोड़ा के लेखन में 'स्त्री विमर्श' की क्या खास विशेषता थी?

उत्तर – उनके स्त्री विमर्श का रूप आक्रामक न होकर सहज और संयत था, मतलब वह अपनी बात सरलता और समझदारी से रखती थीं।

» ज्योतिबा फुले की जीवनी का महत्व (सुधा अरोड़ा के अनुसार)

प्रश्न 5 (आसान). ज्योतिबा फुले ने समाज के किन वर्गों के लिए लड़ाई लड़ी?

उत्तर – दलितों, शोषितों और स्त्रियों के लिए।

प्रश्न 6 (आसान). सुधा अरोड़ा के अनुसार, ज्योतिबा फुले ने किन चीज़ों का विरोध किया?

उत्तर – सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों का।

प्रश्न 7 (मध्यम). ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी ने किस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण काम किया?

उत्तर – शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में।

प्रश्न 8 (कठिन). सुधा अरोड़ा क्यों मानती हैं कि उस दौर की परिस्थितियों में ज्योतिबा फुले का संघर्ष निर्णायक महत्व रखता है?

उत्तर – क्योंकि उस समय समाज में भेदभाव, रूढ़ियाँ और असमानता बहुत ज़्यादा थी, ऐसे में उनके द्वारा शिक्षा और समानता के लिए किया गया काम बहुत हिम्मतवाला और भविष्य बदलने वाला था, भले ही उन्हें व्यापक विरोध झेलना पड़ा।

» ब्राह्मणवादी वर्चस्व का विरोध और 'सत्यशोधक समाज'

प्रश्न 9 (आसान). ज्योतिबा फुले ने किस प्रकार की मानसिकता का विरोध किया था?

उत्तर – उन्होंने ब्राह्मणवादी वर्चस्व और पुरोहितवादी मानसिकता का विरोध किया था।

प्रश्न 10 (आसान). ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित समाज का नाम क्या था?

उत्तर – उन्होंने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की थी।

प्रश्न 11 (मध्यम). सत्यशोधक समाज का मुख्य लक्ष्य क्या था?

उत्तर – सत्यशोधक समाज का मुख्य लक्ष्य समाज में सत्य की खोज करना, सामाजिक समानता लाना और हर प्रकार के भेदभाव को खत्म करना था।

प्रश्न 12 (कठिन). ज्योतिबा फुले के समय में 'विद्या शूद्रों के घर चली गई' का क्या अर्थ था और उन्होंने इसका क्या जवाब दिया?
उत्तर – इस कथन का अर्थ था कि शिक्षा या ज्ञान अब उन लोगों तक पहुँच गया है जिन्हें समाज में नीचा या अज्ञानी समझा जाता था। फुले जी ने इसका जवाब देते हुए कहा कि 'सच का सबेरा होते ही वेद डूब गए, विद्या शूद्रों के घर चली गई, भू-देव शरमा गए', जिसका मतलब है कि सच्चाई के सामने आते ही पुराने विचार खत्म हो गए और सभी को ज्ञान प्राप्त हुआ।

» शोषण-व्यवस्था और दलित-स्त्री आंदोलन पर फुले के विचार

प्रश्न 13 (आसान). फुले जी ने शोषण-व्यवस्था के लिए किन तीन सामाजिक संरचनाओं को ज़िम्मेदार ठहराया?
उत्तर – वर्ण, जाति और वर्ग।

प्रश्न 14 (आसान). राजसत्ता के साथ फुले जी ने किस और सत्ता के गठजोड़ की बात कही, जो शोषण में शामिल थी?
उत्तर – धर्मवादी सत्ता।

प्रश्न 15 (मध्यम). फुले जी के अनुसार, इस शोषण-व्यवस्था के खिलाफ़ आंदोलन में दलितों के अलावा और किसे शामिल होना चाहिए था?
उत्तर – स्त्रियों को।

प्रश्न 16 (कठिन). ज्योतिबा फुले ने 'शोषण-प्रक्रिया' को एक 'गठजोड़' का परिणाम क्यों बताया? स्पष्ट करें।
उत्तर – उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उनके विचार से राजसत्ता और धर्मवादी सत्ता मिलकर समाज में वर्ण, जाति और वर्ग के आधार पर शोषण को बढ़ावा देती थीं, न कि यह सिर्फ किसी एक समूह का काम था।

» ज्योतिबा फुले के मौलिक विचार और पुस्तकें

प्रश्न 17 (आसान). ज्योतिबा फुले की सबसे पहली पुस्तक का नाम क्या था?
उत्तर – गुलामगिरी

प्रश्न 18 (आसान). किस पुस्तक में उन्होंने किसानों की समस्याओं का वर्णन किया है?
उत्तर – शेतकर्यांचा आसूड

प्रश्न 19 (मध्यम). 'आदर्श परिवार' के बारे में ज्योतिबा फुले का क्या विचार था?
उत्तर – उनका मानना था कि जिस परिवार में पिता बौद्ध, माता ईसाई, बेटी मुसलमान और बेटा सत्यधर्मी हो, वह परिवार एक आदर्श परिवार है। यानी, जहाँ विभिन्न आस्थाओं के लोग प्रेम और सद्भाव से रहें।

प्रश्न 20 (कठिन). ज्योतिबा फुले ने आधुनिक शिक्षा पर क्या सवाल उठाए और क्यों?
उत्तर – उन्होंने सवाल उठाया कि 'यदि आधुनिक शिक्षा का लाभ सिर्फ़ उच्च वर्ग को ही मिलता है, तो उसमें शूद्रों का क्या स्थान रहेगा?' उनका मानना था कि अगर शिक्षा केवल अमीर वर्ग को मिले और गरीब वर्ग वंचित रहे, तो ऐसी शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है, क्योंकि यह समाज में असमानता को और बढ़ाएगी।

» स्त्री-शिक्षा और स्त्री-समानता के लिए फुले का संघर्ष

प्रश्न 21 (आसान). ज्योतिबा फुले ने स्त्री-शिक्षा के दरवाजे बंद रखने का क्या कारण बताया?
उत्तर – उन्होंने बताया कि पुरुष स्त्री-शिक्षा के दरवाजे इसलिए बंद रखते थे ताकि स्त्रियां अपने 'मानवीय अधिकारों को समझ न पाएँ'।

प्रश्न 22 (आसान). ज्योतिबा फुले ने विवाह-विधि से किसे हटाया?
उत्तर – उन्होंने 'विवाह-विधि से ब्राह्मण का स्थान ही हटा दिया'।

प्रश्न 23 (मध्यम). ज्योतिबा फुले द्वारा रचित नए मंगलाष्टकों की मुख्य बात क्या थी?
उत्तर – इन मंगलाष्टकों में वधू वर से कहती है कि 'स्वतंत्राता का अनुभव हम स्त्रियों को है ही नहीं' और पति उसे 'उसका अधिकार दोगे और उसे अपनी स्वतंत्राता का अनुभव करने दोगे' इसकी शपथ ले।

प्रश्न 24 (कठिन). ज्योतिबा फुले के स्त्री-समानता संबंधी संघर्ष को आप उनके 'मौलिक विचारों' और 'आदर्श परिवार' की अवधारणा से कैसे जोड़ेंगे?
उत्तर – फुले के मौलिक विचार शिक्षा के महत्व और समानता पर केंद्रित थे। उनका 'आदर्श परिवार' सभी धर्मों को साथ लेकर चलने की बात करता था, और स्त्री-समानता का संघर्ष इसी समानता की भावना का विस्तार था। वे चाहते थे कि जैसे परिवार में सबको समान दर्जा मिले, वैसे ही समाज में स्त्री-पुरुष को भी मिले, और शिक्षा इसका सबसे पहला कदम था।

» सावित्रीबाई फुले का जीवन और शिक्षा में योगदान

प्रश्न 25 (आसान). ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को कौन-कौन सी भाषाएं सिखाईं?
उत्तर – ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को मराठी और अंग्रेजी भाषाएं सिखाईं।

प्रश्न 26 (आसान). सावित्रीबाई को बचपन से किस चीज़ में रुचि थी?
उत्तर – सावित्रीबाई को बचपन से शिक्षा में रुचि थी।

प्रश्न 27 (मध्यम). लाट साहब से मिली पुस्तक पर सावित्रीबाई के पिता की क्या प्रतिक्रिया थी और क्यों?
उत्तर – लाट साहब से मिली पुस्तक पर सावित्रीबाई के पिता 'आगबबूला' हो गए और उन्होंने उसे कूड़े में फेंक दिया। उन्हें डर था कि यह पुस्तक उनकी बेटी को 'भ्रष्ट' कर देगी और 'सारे कुल को भ्रष्ट' करेगी, क्योंकि यह एक मिशनरी पुस्तक थी और वे ईसाई धर्म के प्रभाव से बचना चाहते थे।

प्रश्न 28 (कठिन). सावित्रीबाई के जीवन की वह घटना जिसमें उन्हें पुस्तक मिली, उस समय के समाज की किस सोच को उजागर करती है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – यह घटना उस समय के समाज की रूढ़िवादी और संकीर्ण सोच को उजागर करती है, जहाँ शिक्षा, विशेषकर स्त्री शिक्षा और अन्य धर्मों से जुड़ा ज्ञान, को बुरा माना जाता था। जब लाट साहब ने सावित्री को पुस्तक दी, तो उनके पिता ने उसे 'ईसाइयों से ऐसी चीजें लेकर तू भ्रष्ट हो जाएगी' कहकर फेंक दिया। यह दिखाता है कि समाज में धर्म और जाति के आधार पर शिक्षा पर प्रतिबंध थे और बदलाव को आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता था।

» भारत की पहली कन्याशाला और फुले दंपति के सामाजिक कार्य

प्रश्न 29 (आसान). भारत की पहली कन्याशाला कब और कहाँ स्थापित हुई थी?
उत्तर – भारत की पहली कन्याशाला 14 जनवरी 1848 को पुणे के भिड़े के बाड़े में स्थापित हुई थी।

प्रश्न 30 (आसान). सावित्रीबाई फुले को पढ़ाने जाते समय किस तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ता था?
उत्तर – उन्हें रास्ते में लोग गालियाँ देते, थूकते, पत्थर मारते और गोबर उछालते थे।

प्रश्न 31 (मध्यम). ज्योतिबा और सावित्रीबाई फुले ने अनाथ बच्चों और विधवाओं के लिए क्या काम किया?
उत्तर – उन्होंने 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' खोला, जहाँ अनाथ बच्चों और विधवाओं के नवजात बच्चों की देखभाल की जाती थी।

प्रश्न 32 (कठिन). फुले दंपति ने सामाजिक भेदभाव को दूर करने के लिए कौन सा महत्वपूर्ण कदम उठाया, जिससे दलितों को मदद मिली?
उत्तर – उन्होंने महार, चमार और मांग जाति के लोगों को अपने घर के पानी का हौद (कुआँ) सभी जातियों के लिए खोल दिया, जिससे दलित भी बिना रोक-टोक पानी पी सकें।

» फुले दंपति का आदर्श दांपत्य जीवन

प्रश्न 33 (आसान). दांपत्य जीवन से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – दांपत्य जीवन का अर्थ पति-पत्नी का रिश्ता और उनका साथ होता है।

प्रश्न 34 (आसान). फुले दंपति का मुख्य साझा लक्ष्य क्या था?
उत्तर – उनका मुख्य साझा लक्ष्य समाज में शिक्षा लाना, खासकर लड़कियों और दलितों के लिए था।

प्रश्न 35 (मध्यम). फुले दंपति का दांपत्य जीवन कैसे 'एक आदर्श दांपत्य की मिसाल' था?
उत्तर – उनका दांपत्य जीवन एक-दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण और एक साझा लक्ष्य (समाज सुधार व शिक्षा) के लिए मिलकर काम करने के कारण एक आदर्श मिसाल था।

प्रश्न 36 (कठिन). आप अपने जीवन में फुले दंपति के दांपत्य जीवन से क्या सीख लेते हैं, और उसे कैसे लागू करेंगे?
उत्तर – मैं फुले दंपति से यह सीख लेता हूं कि रिश्तों में सिर्फ भावनात्मक जुड़ाव ही नहीं, बल्कि साझा उद्देश्य और एक-दूसरे का सहयोग भी महत्वपूर्ण है। मैं अपने रिश्तों में खुले संवाद, समर्थन और मिलकर लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करूंगा, चाहे वे व्यक्तिगत हों या सामाजिक।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. सुधा अरोड़ा के दो कहानी संग्रह और उनके स्त्री विमर्श की शैली की एक विशेषता बताइए।

› पहला, उनके किन्हीं दो कहानी संग्रह का नाम याद करेंगे।
› दूसरा, उनकी लेखन शैली में स्त्री विमर्श की क्या खासियत थी, उसे समझेंगे।
› उत्तर में दोनों बातें स्पष्ट रूप से बताएंगे।

उत्तर – सुधा अरोड़ा के दो कहानी संग्रह हैं: 'बगैर तराशे हुए' और 'युद्ध-विराम'। उनके स्त्री विमर्श की शैली की विशेषता यह है कि यह 'आक्रामक न होकर सहज और संयत' है, यानी वो अपनी बात सरलता और समझदारी से रखती हैं।

उदाहरण 2. सुधा अरोड़ा ने ज्योतिबा फुले की जीवनी में उनके किन मुख्य योगदानों पर प्रकाश डाला है?

› पहला कदम, हम समझेंगे कि 'मुख्य योगदान' से हमारा क्या मतलब है – यानी वो कौन से सबसे ज़रूरी काम थे, जिनके लिए फुले जी को याद किया जाता है।

› दूसरा कदम, हम लेखिका के नजरिए से देखेंगे कि उन्होंने किन बातों को ज़्यादा महत्व दिया है। हमें याद है कि उन्होंने 'शिक्षा' और 'समाज सुधार' पर जोर दिया।

› तीसरा कदम, हम उन विशेष वर्गों की पहचान करेंगे जिनके लिए फुले जी ने काम किया – 'दलितों, शोषितों और स्त्रियों' के हक की लड़ाई।

› चौथा कदम, हम यह भी लिखेंगे कि उन्होंने इन कामों को करते हुए किन चुनौतियों का सामना किया – 'सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों का विरोध' और 'व्यापक विरोध' भी सहा।

उत्तर – सुधा अरोड़ा ने ज्योतिबा फुले की जीवनी में उनके द्वारा किए गए शिक्षा और समाज सुधार संबंधी कार्यों के महत्व पर प्रकाश डाला है। उन्होंने विशेष रूप से दलितों, शोषितों और स्त्रियों की समानता के हक के लिए उनके संघर्ष और सामाजिक व धार्मिक रूढ़ियों का विरोध करने की उनकी हिम्मत को रेखांकित किया है।

उदाहरण 3. ज्योतिबा फुले ने किस समाज की स्थापना की और उसका मुख्य उद्देश्य क्या था?

› पहला कदम: याद करें कि ज्योतिबा फुले जी ने किस महान संगठन को बनाया था।
› दूसरा कदम: यह संगठन किस सोच और किस लक्ष्य के साथ बनाया गया था, उस पर विचार करें।
› तीसरा कदम: जवाब को सरल शब्दों में व्यक्त करें।

उत्तर – ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की थी। इसका मुख्य उद्देश्य ब्राह्मणवादी वर्चस्व, पुरोहितवादी मानसिकता का विरोध करना और समाज में सत्य की खोज तथा समानता स्थापित करना था।

उदाहरण 4. ज्योतिबा फुले ने शोषण-व्यवस्था के मूल कारणों और उसके खिलाफ़ आंदोलन के बारे में क्या कहा?

› फुले जी का मानना था कि समाज में 'वर्ण', 'जाति' और 'वर्ग' की व्यवस्थाएं एक-दूसरे की पूरक हैं और यही शोषण का आधार बनती हैं।

› उन्होंने कहा कि यह 'शोषण-प्रक्रिया' सिर्फ एक हिस्से से नहीं चलती, बल्कि 'राजसत्ता' (सरकार या शासक) और 'धर्मवादी सत्ता' (धार्मिक नेता या पुरोहित) आपस में 'गठजोड़' करके इस व्यवस्था को बनाए रखते हैं।

› इस शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाने और आंदोलन करने के लिए, फुले जी ने सिर्फ 'दलितों' को ही नहीं, बल्कि 'स्त्रियों' को भी इसमें शामिल होने की प्रेरणा दी, क्योंकि वे भी इस व्यवस्था का शिकार थीं।

उत्तर – ज्योतिबा फुले के अनुसार, शोषण-व्यवस्था का मूल कारण वर्ण, जाति और वर्ग का गठजोड़ था, जिसे राजसत्ता और धर्मवादी सत्ता मिलकर चलाती थीं। इसके खिलाफ़ दलितों और स्त्रियों दोनों को आंदोलन करना चाहिए।

उदाहरण 5. ज्योतिबा फुले के अनुसार 'अविद्या' से क्या-क्या 'अनर्थ' होते हैं? उनकी किस पुस्तक में यह विचार मिलता है?

› पहला चरण: उनके कथन 'विद्या बिना मति गई, मति बिना नीति गई, नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शूद्र गए, इतने अनर्थ एक अविद्या ने किए' को समझना।

› दूसरा चरण: इन 'अनर्थों' को क्रम से बताना – अविद्या से बुद्धि का नाश, फिर नैतिकता का अभाव, प्रगति में बाधा, धन की हानि, और अंततः समाज के निचले तबके का पतन।

› तीसरा चरण: उस पुस्तक का नाम पहचानना जिसमें यह विचार मिलता है – 'शेतकर्यांचा आसूड'।

उत्तर – ज्योतिबा फुले के अनुसार, 'अविद्या' (अशिक्षा) से सबसे पहले 'मति' (बुद्धि) चली जाती है, जिससे 'नीति' (नैतिकता) का अभाव होता है। नैतिकता न होने से 'गति' (प्रगति) रुक जाती है, 'गति' रुके तो 'वित्त' (धन) का नुकसान होता है, और अंततः 'शूद्र' (वंचित वर्ग) का जीवन और भी कठिन हो जाता है। ये सभी 'अनर्थ' उनकी पुस्तक 'शेतकर्यांचा आसूड' में वर्णित हैं।

उदाहरण 6. ज्योतिबा फुले ने स्त्री-समानता के लिए विवाह-विधि में क्या बदलाव किए?

› पहला कदम, उन्होंने पूरी 'विवाह-विधि से ब्राह्मण का स्थान ही हटा दिया'।

› दूसरा, उन्होंने 'नए मंगलाष्टक तैयार किए' जो वधू-वर को समझ आ सकें।

› तीसरा, उन्होंने पुराने मंत्रों को हटाया जो 'स्त्री की गुलामगिरी सि(करनेवाले' थे।

› आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने ऐसे मंगलाष्टक बनाए जिसमें 'वधू वर से कहती है µ स्वतंत्राता का अनुभव हम स्त्रियों को है ही नहीं। इस बात की आज शपथ लो कि स्त्राी को उसका अधिकार दोगे और उसे अपनी स्वतंत्राता का अनुभव करने दोगे।'

› इन बदलावों से शादी सिर्फ एक संस्कार नहीं, बल्कि स्त्री के अधिकारों और स्वतंत्रता की घोषणा बन गई।

उत्तर – ज्योतिबा फुले ने स्त्री-समानता के लिए विवाह-विधि से ब्राह्मणों का स्थान हटाकर नए, समझने योग्य मंगलाष्टक बनाए, और उनमें स्त्री की स्वतंत्रता व अधिकारों की शपथ को शामिल किया।

उदाहरण 7. सावित्रीबाई फुले के जीवन की वह कौन सी घटना है जो उनके शिक्षा के प्रति दृढ़ संकल्प को दर्शाती है?

› पहले उनके बचपन की घटना को याद करें: जब उन्हें लाट साहब से एक पुस्तक मिली।

› उनके पिताजी की प्रतिक्रिया देखें: उन्होंने पुस्तक को 'कूड़े में फेंक दिया' और कहा 'तू भ्रष्ट हो जाएगी'।

› सावित्रीबाई का अगला कदम: 'सावित्री ने वह पुस्तक उठाकर एक कोने में छुपा दी।'

› विवाह के बाद का प्रसंग: 'अपने सामान के साथ उस किताब को सहेजकर ससुराल ले आई और शिक्षित होने के बाद वह पुस्तक पढ़ी।'

› यह घटना दिखाती है कि बाहरी विरोध के बावजूद, उन्होंने शिक्षा की अपनी इच्छा को कभी नहीं छोड़ा।

उत्तर – लाट साहब से मिली पुस्तक को पिताजी द्वारा फेंक दिए जाने के बावजूद सावित्रीबाई ने उसे छिपाकर रखा और विवाह के बाद ससुराल में उसे पढ़ा, यह घटना शिक्षा के प्रति उनके अटूट दृढ़ संकल्प को दर्शाती है।

उदाहरण 8. फुले दंपति के सामाजिक कार्यों का विस्तार से वर्णन करें, जिसमें कन्याशाला की स्थापना के साथ-साथ उनके अन्य महत्वपूर्ण योगदानों का भी उल्लेख हो।

› सबसे पहले, 14 जनवरी 1848 को पुणे में भारत की पहली कन्याशाला की स्थापना का उल्लेख करें, और बताएं कि यह लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम था।

› दूसरा, सावित्रीबाई फुले को पढ़ाने जाते समय लोगों द्वारा की गई गालियों, थूकने और पत्थर मारने जैसी बाधाओं का जिक्र करें और बताएं कि कैसे उन्होंने इन सबका सामना किया।

› तीसरा, उनके अन्य सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डालें, जैसे 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना, जहाँ अनाथ बच्चों और विधवाओं के बच्चों की देखभाल की जाती थी।

› चौथा, दलितों के प्रति उनके योगदान को स्पष्ट करें, जैसे अपने घर के पानी का हौद महार, चमार और मांग जैसी जातियों के लिए खोल देना, ताकि वे भी पानी पी सकें।

› अंत में, इस बात पर ज़ोर दें कि इन सभी कार्यों को उन्होंने 'एक प्राण होकर' और 'डंवेफ की चोट पर' किया, यानी पूरे दृढ़ संकल्प और बिना डर के।

› निष्कर्ष में बताएं कि इन कार्यों ने कैसे सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों को तोड़ने में मदद की।

उत्तर – फुले दंपति ने 14 जनवरी 1848 को पुणे में भारत की पहली कन्याशाला की स्थापना कर लड़कियों की शिक्षा में क्रांति लाई। सावित्रीबाई को पढ़ाने जाते समय भयंकर सामाजिक विरोध, गालियाँ और पत्थर झेलने पड़े, फिर भी वे अडिग रहीं। इसके अलावा, उन्होंने अनाथ बच्चों और विधवाओं के लिए 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' खोला और उनकी देखभाल की। जातिगत भेदभाव मिटाने के लिए उन्होंने अपने घर का पानी का हौद दलित जातियों (महार, चमार, मांग) के लिए भी खोल दिया। इन सभी कार्यों को उन्होंने अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प के साथ किया, जिससे समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंध-श्रद्धा और अन्यायपूर्ण रूढ़ियों को ध्वस्त किया जा सका।

उदाहरण 9. फुले दंपति का दांपत्य जीवन आधुनिक दंपतियों को किस प्रकार प्रेरित करता है?

› पहला कदम: सबसे पहले यह समझना होगा कि उनका दांपत्य जीवन सिर्फ पति-पत्नी का रिश्ता नहीं था, बल्कि एक 'लक्ष्य वेफ प्रति समर्पित जीवन' था।

› दूसरा कदम: वे दोनों 'एक-दूसरे के प्रति समर्पित' थे और एक-दूसरे का पूरा सम्मान करते थे, जैसा कि सावित्रीबाई ने स्कूल जाने में ज्योतिबा का साथ दिया।

› तीसरा कदम: उन्होंने समाज सुधार के अपने साझा लक्ष्य के लिए 'कंधे से कंधा मिलाकर' काम किया, चाहे कितनी भी कठिनाइयां आईं।

› चौथा कदम: यह दर्शाता है कि एक आदर्श दांपत्य जीवन में सिर्फ प्यार ही नहीं, बल्कि एक-दूसरे का सहयोग, साझा उद्देश्य और समाज के प्रति जिम्मेदारी भी होनी चाहिए।

› पांचवां कदम: इसलिए, आज के दंपतियों को भी अपने व्यक्तिगत और सामाजिक लक्ष्यों को साझा करने और मिलकर काम करने की प्रेरणा मिलती है।

उत्तर – फुले दंपति का दांपत्य जीवन आधुनिक दंपतियों को एक-दूसरे के प्रति समर्पण, साझा लक्ष्यों के लिए मिलकर काम करने, और कठिनाइयों में एक-दूसरे का साथ देने की प्रेरणा देता है, जिससे वे अपने रिश्ते को मजबूत और सार्थक बना सकें।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- सुधा अरोड़ा के प्रमुख कहानी संग्रह और उनके स्त्री विमर्श की शैली पर आधारित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं, इसलिए इन बिंदुओं को अच्छे से याद कर लेना।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ज्योतिबा फुले और 'सत्यशोधक समाज' के उद्देश्यों पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।
- ज्योतिबा फुले के तीनों मुख्य ग्रंथों के नाम और उनका मुख्य विषय याद रखना, ये बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं। खासकर 'आदर्श परिवार' और 'अविद्या से अनर्थ' वाले कथन पर ध्यान देना।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में फुले दंपति के योगदान या सामाजिक सुधार पर एक लंबा उत्तर वाला प्रश्न (5-6 अंक) बन सकता है। आपको सभी सामाजिक कार्यों का विस्तृत उल्लेख करना होगा।

एक नज़र में रिवीज़न

› सुधा अरोड़ा: लाहौर में जन्म, कहानीकार, 'सहज व संयत स्त्री विमर्श'

› ज्योतिबा फुले ने ब्राह्मणवादी वर्चस्व का विरोध कर 'सत्यशोधक समाज' स्थापित किया, समानता के लिए।

› फुले के विचार: 'गुलामगिरी', 'शेतकर्यांचा आसूड', 'सार्वजनिक सत्यधर्म', आदर्श परिवार, सबके लिए शिक्षा।

› पहली कन्याशाला (1848), लड़कियों की शिक्षा, अनाथ/विधवा, दलित पानी.